National Journal of Multidisciplinary Research and Development
ISSN: 2455-9040
Impact Factor: RJIF 5.22
www.nationaljournals.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 507-510

महाभारत काल में नारियों की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थितिः एक विश्लेषण

डॉ0 रजनीश राय
समाजकार्य एवं मानव विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

महाभारत महर्षि वेदव्यास द्वारा प्रणीत महाकाव्य है। जो धर्मनीति, समाजनीति एवं जीवन के अन्यानय पक्षों पर एक अभूत–पूर्व ग्रंथ है। इसलिए महाभारत को प्राचीन भारत का विश्वकोष कहना अत्यधिक समीचीन है। महाभारत काल तक स्त्रियों की शिक्षा एवं अध्यात्मिक उन्नति में शनैः–शनैः ह्रास होने पर भी नारी को समाज में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त है। नारीत्व का उच्चत्तम समाज में आदर विद्यमान था। भारतीय आध्यात्म में दो भिन्न रूपों प्रथमतः प्रबल विरक्ति एवं द्वितीय उत्कट्ट अनुरिक्त मिश्रित दो परस्पर विरोधी धारणायें प्रचलन में अस्तित्वमान थी। एक ओर नारी को अनन्त गौरव दिया गया तो दूसरी ओर उसे समस्त दोषों का मूल बताया गया।

महाभारत काल में वैदिक काल के समान ही पतिव्रत पर विशेष बल प्रदान किया गया। सावित्री ने अपने पिता द्वारा दूसरा वर खोजने की बात सुनकर कहा था कि ''उसने जिसे वरण किया है वह दीर्घायु हो अथवा अल्पायु गुण वाला हो अथवा गुणहीन वह उसका पति होगा। वह किसी अन्य की नहीं हो सकती। महाभारत में वन पर्व में जो पतिव्रता महात्म्य पर्व भी है में कहा गया है कि नारी पति सेवा द्वारा ही स्वर्ग लोक पर विजय प्राप्त कर सकती है।

श्री कृष्ण ने एक स्थल पर कहा है कि उनके राज्य की समस्त स्त्रियाँ पतिव्रता, रूपवती, आभूषणों से युक्त शास्त्रार्थ से सम्पन्न एवं अपने उत्तम गुणों एवं आचरण के द्वारा अपने पति की प्रसन्नता को बढ़ाती रहती हैं।

इस समय नारी के मात्र रूप को ही आदर व महत्व प्रदान किया गया था नारी की महत्ता माँ बनने में ही समझी जाती थी। इस काल में नियोग प्रथा प्रचलित थी पति की मृत्यु या उसके न रहने पर स्त्री अपने देवर अथवा पति के किसी सम्बन्धी तथा अन्य गोत्रज से सन्तान उत्पन्न करा सकती थी। कुंती, सुदोषणा एवं विचित्र वीर्य की पत्नियों द्वारा नियोग द्वारा पुत्र उत्पन्न की थीं।

इन दिनों कुछ वंशो और जातियों में बहुपति विवाह भी होते थे। द्रोपदी के पाँच पति थे। अभिमन्यु का विवाह 16 वर्ष की आयु में हुआ था। भीष्म के अनुसार तीस वर्ष की आयु का पुरूष 10 वर्ष की कन्या से और 21 वर्ष का पुरूष सात वर्ष की कन्या से विवाह कर सकता है। सती प्रथा का प्रचलन नहीं था। विचित्र वीर्य के निधन पर उनकी रानियां सती नहीं हुई थी।

रामायण के सदृश महाभारत में भी स्त्रियों की सामाजिक एवं राजनीतिक गतिविधियों में सहभागिता को सुनिश्चित किया गया। रामायण की भाँति महाभारत काल में महिषी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त था और महिषी अर्थात राजरानी अपने पद के उत्तर–दायितवों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया। राजकुमारों के समान राजकुमारियों को भी यथोचित शिक्षा का प्रबन्ध किया गया था। राजकुमारी उत्तरा के शिक्षक के रूप में बृहन्नला रूपधारी अर्जुन को नियुक्त किया गया था। द्रोपदी अत्यन्त बुद्धिमत्तापूर्वक शास्त्र एवं संवाद किया करती थीं। द्रोपदी के अद्वितीय मस्तिष्क का प्रभाव पाण्डवों पर तथा उनकी नीति पर स्वाभाविक रूप से पड़ा। द्रोपदी अपने गहन राजनितिक ज्ञान का परिचय देते हुए युधिष्ठिर को दृढ़तापूर्वक राजदण्ड धारण करने की प्रेरणा देती है। वह समयानुसार या दूसरे शब्दों में युग सापेक्ष क्रोध व क्षमा की नीति का अनुसरण करने की प्रेरणा देती हैं। युधिष्ठिर के मन में वैराग्य उत्पन्न होने पर उन्हें वन, और पर्वतों से युक्त पृथ्वी का शासन करने का परामर्श देती थीं। वन–पर्व में युधिष्ठिर के शक्ति विषयक क्रोध को प्रज्जवलित करने के लिए द्रोपदी द्वारा जिन सन्तापपूर्ण वचनों का प्रयोग किया गया है वह द्रोपदी के असीम ज्ञान को प्रदर्शित करता है। हॉकिन्स के अनुसार ब्राह्मण काल की चालाक, बुद्धिमान व विदुषी स्त्रियों की भाँति द्रौपदी भी शिक्षित बुद्धिमान और किसी के आगे आत्मसमर्पण करने वाली नहीं थी। द्रोपदी युधिष्ठिर को बुद्धि धर्म एवं ईश्वर के न्याय पर आक्षेप करती है। द्रोपदी ने एक बृहद शास्त्रार्थ के माध्यम से प्रारब्ध जैसे कठिन विषयों पर भी अपनी मीमांस प्रस्तुत की। द्रोपदी दैवीय व मानसिक विषयों की सूक्ष्म चीजों की भिज्ञ महिला थी। द्रोपदी पुरूषार्थ को प्रधान मानकर देश काल के अनुसार साम, दाम, दंड, भेद नीति का परामर्श युधिष्ठिर को देती है। कार्य की समस्त युक्तियों में पराक्रम की श्रेष्ठता को माना गया है। यह राजानीति का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है कि जब शत्रु संकट में हो तब उस पर आक्रमण करना चाहिए, इस प्रकार की युद्ध नीति का प्रतिपादन द्रोपदी करती है। द्रोपदी के राजनीतिक विषयक ज्ञान, पतियों को दास भव से मुक्त कराया था। इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि महाभारत कालीन नारी राजनीतिक गतिविधियों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। दूसरे शब्दों में यह कहना असंगत न होगा कि महाभारत कालीन नारी राजत्व के सिद्धान्तों से प्रात्यांगभूत थी परन्तु इस क्रम में यह स्मरण रखना भी आवश्यक है कि राजनीतिक सहभागिता जिसका सन्दर्भ व परिपेक्ष्य नारी है महाभारत काल में केवल अभिजात्य वर्ग या राजपरिवार तक ही सीमित थी। साधारण नारी तत्कालीन राजतंत्र में अपनी भूमिका नहीं निभाते थी। अतः स्वाभाविक रूप से तत्कालीन महाभारत काल में सामान्य नारी जाति की समाजिक, राजनीतिक गतिविधियां शून्य थी। सामान्य नारी की राजनीतिक, समाजिक गतिविधियों के विषय में उस समय के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्रोत लगभग मौन है। फलतः यह कहना युक्तिसंगत प्रतीत होता है कि महाभारत काल में स्त्रियों की समाजिक राजनीतिक भूमिका तो थी परन्तु वह राजवंश तक सीमित थी।

महाभारत काल में जहाँ तक पत्नियों का प्रश्न है राजा या राजकुमार के साथ उनका भी राज्याभिषेक होता था। कुन्ती, द्रोपदी को आशीर्वाद देते हुए कहती हैं कि पतियों के साथ रानी के पद पर तुम्हारा अभिषेक हो। राजसूय यज्ञ में द्रोपदी के साथ द्रोपदी के केश, मंत्र द्वारा अभिसिंचित किया गया था। राज्याभिषेक के समय युधिष्ठिर के साथ द्रोपदी का भी राज्याभिषेक किया गया था।

महारानी कुन्ती ने भी अपने स्वामी के साथ राज्य का उपभोग किया था। बड़े–बड़े दान किये और यज्ञों में विधिपूर्वक सोमपान किया। द्रोपदी ने एक स्थल पर कहा है कि पृथ्वी मेरे वश में थी इससे यह ध्वनित होता है कि पत्नी भी पति के साथ राज्य की अधिकारिणी होती थी। अतः अश्वमेघ यज्ञ में ब्राह्मणों को पृथ्वी का दान करने के युधिष्ठिर के विचार का उसके भाइयों एवं द्रोपदी द्वारा अनुमोदन आवश्यक था कुन्ती ने उत्साहपूर्ण व वाकपटुता से अपने पुत्रों को आदेश दिया कि वे द्रोपदी की सलाह माने इससे यह स्पष्ट होता है कि उसके सम्बन्धियों को द्रोपदी के निर्णय पर विश्वास था। रावण ने भी सीता से ऐसा ही प्रस्ताव प्रस्तुत करते हुए कहा था कि तुम सम्पूर्ण लंका का उपभोग करो मुझ जैसा राक्षस, देवता तथा समस्त जगत के सेवक तुम्हारे सेवक बनकर रहेगें इससे यह सिद्ध होता है कि राक्षसों के राज्य में भी स्त्रियां शासिका थीं।

राजरानियां राजाओं के असावधान रहने पर स्वयं सावधान रहती थीं। दमयन्ती को महाभारत में देश काल का मर्मज्ञ बताया गया है। अर्थशास्त्र में आचार्य कौटिल्य कहते है कि राजा को राजमहिषी से सदैव सर्तक रहना चाहिए तथा राज्य के अन्य महत्वपूर्ण अधिकारियों के समान आचार्य कौटिल्य राजमाता के लिए वृत्तिका की व्यवस्था का पक्ष पोषण करते हैं। कश्मीर के राज्य में रानी सूर्यमनि तथा निलेखा ने स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य किया। इस प्रकार उपर्युक्त वर्णनों से स्पष्ट है कि महाभारत के शासन काल में रानी या महिषी का महत्वपूर्ण हाथ होता था और इस कारण उसका राज–धर्म से परिचित होना आवश्यक समझा जाता था। महिषी के बाद जिस महिला को सर्वाधिक राजनीतिक व सामाजिक सम्मान प्राप्त था वह राजमाता के नाम से जानी जाती थी महिषी के समान ही राजमातायें भी प्रशासन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थी। पत्नी के रूप में सम्मान तथा राजमाता के रूप में वे श्रद्धा व आदर भाव प्राप्त करती थी। और अनेक विषम परिस्थितियों में राजा भी उनसे परामर्श करता था। राजमाता उस समय जब उनके पति का स्वर्गवास हो जाता था या कैद कर लिए जाते थे अथवा पुत्र अल्पायु रहते थे राजमाता दृढ़ता से प्रशासन अपने हाथ में ले लेती थी। शांतनु के स्वर्गवास हो जाने पर भीष्म सत्यवती के परामर्श से ही शासन चलाते थे। राजमातायें निरन्तर राज्य के कल्याण में रत रहती थी और विषम परिस्थितियों के अस्तित्वमान रहने पर विवेकपूर्ण परामर्श के द्वारा समस्याओं के समाधान में सहयोग देती थी। विचित्र वीर्य के निःसंतान मर जाने पर शांतनु की कुल परंपरा विलुप्त हो जाने से सत्यवती व्याकुल हो उठी उसने तत्काल इसके समाधान का प्रयास किया और भीष्म से आग्रह किया कि तुम दोनों भाइयों की पुत्र–बधुओं से सन्तान उत्पन्न करों और भीष्म को यह भी निर्देशित किया कि तुम राजधर्म कार्य का अवश्य पालन करो। भीष्म के सहमत न होने पर सत्यवती ने महर्षि पराशर से उत्पन्न अपने पुत्र वेदव्यास को नियोग के लिए नियुक्ति किया और नष्ट हुई कुल की परम्परा को सुरक्षित रखा। अन्य महत्वपूर्ण उदाहरण गान्धारी का है। पति परायाण गान्धारी परिस्थितियों को सूक्ष्मता को समझने में कुशल थी। वह अपनी बुद्धि द्वारा यह परिज्ञात कर चुकी थी कि इस क्रूर दुर्योधन के द्वारा कुल का विनाश अवश्यमभावी है। इसलिए उसने धृतराष्ट्र को चेताया था कि वह इन उदण्ड बालकों की बाल सुलभ जिज्ञासा को प्रश्रय न दें तथा इस वंश के विनाश का कारण न बने। परिवार के बंधे हुए पुल को मत तोड़िए। पाण्डव शांत है, विद्वेष से विमुख हैं यद्यपि आप जानते है फिर भी मैं आपको स्मरण दिलाती हूँ।

गान्धारी जहाँ एक ओर पतिव्रता थी वही दूसरी ओर निर्भीक और न्यायप्रिय भी थी। उन्होंने सदैव सत्य नीति एवं धर्म का पक्ष लिया तथा अन्याय का विरोध किया। भरी सभा में द्रोपदी पर उनके पुत्रों द्वारा जो अत्याचार किया गया उससे वे अप्रसन्न थीं। दुर्योधन की धृष्ठता से परेशान होकर वे उसे त्याग देने का परामर्श देती है। समय–समय पर वह धृतराष्ट्र के अनीतियुक्त आचरण के लिए उन्हें सचेत करती रहती थी। पुनः द्रुत में प्रवृत्त हुए युधिष्ठिर को उन्होंने रोका था।

धृतराष्ट्र के द्वारा संजय से एकान्त में दोनों पक्षों का बलाबल को जानने की अभिलाषा प्रकट करने पर संजय कहते है कि मैं गान्धारी की उपस्थिति में आप से कुछ बताऊँगा। एकान्त में नहीं क्योंकि वह धर्म मर्मज्ञा हैं। विचार मर्मज्ञ तथा सिद्धान्तकार हैं। वे दुर्योधन को उसके अनुचित कृत्यों पर चेताया करती थीं और उसकी अनीति के भावी दुष्परिणाम की भयावहता का चित्रांकन किया करती थीं। गान्धारी की सम्मति, प्रतिभा एवं बुद्धि पर सभी पक्षों की आस्था थी। दुर्योधन को जब युद्ध के विचार से विरत करने में श्रीकृष्ण एवं कुरू वंश के लोग सफल न हए तो पुत्र को सुमार्ग के अन्तिम उपाय के रूप में गान्धारी का स्मरण किया जाता है और गान्धारी दुर्योधन की निन्दा करती हैं साथ ही साथ वह धृतराष्ट्र की भर्त्सना करती हैं। अल्टेकर ने इसी प्रकार का विचार व्यक्त करते हुए लिखा है कि रानियाँ शासन में दखल करती थीं। वे लोग प्रायः पेचीदे मामलों में दूत कार्य में नियुक्त होती थीं और उनके परामर्श की सम्भव्यता को दृष्टिपथ में रखा जाता था। वह धृतराष्ट्र से कहती हैं कि मूढ़ और अज्ञानी पुत्र को राज देकर उसका दुष्परिणाम आजीवन ही भोगेगें। दण्ड तथा भेद नीति के द्वारा जिस पर विजय प्राप्त किया जा सकता है वहां कौन मूर्ख दण्ड का प्रयोग करेगा। दुर्योधन को सन्मार्ग पर लाने के लिए उन्होंने जो तथ्य प्रस्तुत किये वे उनके राजनीति विषयक ज्ञान और दूरदर्शिता का परिचायक है। वे दुर्योधन से पाण्डवों का न्यायोचित भाग आधा राज्य देने को कहती है।

महाभारत काल, महिला की समाजिक एवं राजनीतिक भूमिका की दृष्टि से अत्यनत महत्व का रहा है। इस तथ्य का मूल्यांकन करने के क्रम में इस बात को दृष्टिपथ में रखना पड़ेगा कि तत्कालीन महाभारत कालीन शासन का स्वरूप पूर्णरूपेण राजतंत्रात्मक था। राजतंत्र अनुवांशिक रूप से राजा के बड़े पुत्र को प्राप्त होता है अर्थात प्रशासन में प्रतिभा परिश्रम एवं अभियोग्यता को दृष्टिपथ में रखना असम्भव है। राजा के पुत्र के अतिरिक्त राज परिवार में चाहे कितने व्यक्ति, जिसमें सामान्य जन भी सम्मिलित हैं, राजमुकुट एवं राजदण्ड धारण करने की अभियोग्यता रखते हैं, उन्हें उस पद के अयोग्य करार दिया जाता है। महाभारत कालीन राजत्व के सिद्धानतों में यह तथ्य विशेष रू‍प से उल्लेखनीय है पितामह भीष्म शांति पर्व में कहते है '' जिस प्रकार हाथी पांव में आकर सभी सजीवों के पांव समाहित हो जाते है उसी भाँति दण्डनीति में सभी प्रकार की नीतियाँ आश्रय पाती हैं। उनकी व्याख्या होती है तथा जब किसी अन्य नीति निवर्चन का प्रश्न आता है तो दण्ड नीति आपद धर्म को दृष्टिपथ में रखकर उसकी सामयिक विवेचना प्रस्तुत करता है। निवर्चन की इस प्रक्रिया का सीधा अन्तरसम्बन्ध विमर्श और संवाद से है क्योंकि निवर्चन को गूढ़ पुरूषों से विचार विमर्श एवं संवाद से गुजरना पड़ता है। महाभारत काल में विमर्श राजत्व का अपरिहार्य अंग था। इस क्रम में विशेष रूप से उल्लेखनीय तथ्य है कि ''नारी विमर्श'' को गरिमा पूर्ण स्थिति प्राप्त थी। सत्यवती, गान्धारी, कुंती, द्रोपदी के परामार्श को दैनिन्दिन जीवन में महत्वपूर्ण स्थिति प्राप्त थी। राजा, राज–प्रशासन के भिज्ञ जन इन तेजस्वी नारियों के परामर्शकारी अधिकार का अत्यधिक सम्मान करते थे। दूसरे शब्दों में महाभारत कालीन राज व्यवस्था में स्त्री परामर्श के अनुरूप प्रशासन का प्रबन्धन होता है। अतः निःसकोच भाव से यह कहना असंगत न होगा कि महाभारत काल में भारतीय नारी को समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त था राजनीतिक एवं प्रशासनिक क्षेत्र

में उसका हस्तक्षेप सकारात्मक है।

महाभारत कालीन सामाजिक एवं राजनीतिक अवस्था में स्त्रियों की भूमिका का वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि महाभारतकाल में नारी प्रभाव अब तक अभिजात्य वर्ग के सन्दर्भ एवं परिप्रेक्ष्य में किया गया। परन्तु इस क्रम में जन सामान्य नारी की राजनीतिक एवं सामाजिक जागरूकता का विश्लेषण करना समीचीन होगा।

प्रथमतः इस काल की जन सामान्य नारियों में दासियों की संगणना होती है। जहाँ तक दासी स्त्रियों की स्वतंत्रा का प्रश्न है वह अत्यन्त सीमित थी। वह स्वामियों की व्यक्गित सम्पत्ति समझी जाती थी। यही कारण है कि उन्हें अपने स्वामी की उचित तथा अनुचित इच्छाओं का पालन करना पड़ता था। राजाओं द्वारा युद्ध में दासियों को दाव में लगाया जाता था। युद्ध में पराजित होने पर शत्रु द्वारा हस्तगत धन में दासियां भी होती थीं। शल्य वध के उपरान्त कौरव शिविरों से पाण्डवों ने कोष, रत्न एवं असंख्य दासियों को हस्तगत कर लिया था।

महाभारत कालीन दासियाँ विशिष्ट जनों और विद्वानों के लिए भोग विलास के लिए होती थीं। महराज विराट की पत्नी ने कीचक के दुर्भाव को जानते हुए भी सारन्ध्री (अज्ञात वास में द्रोपदी का नाम) को, कामाशक्त कीचक के पास भेजा था। यह महाभारत कालीन दासी की सामाजिक हेयता का ज्वलंत उदाहरण है इस घटना पर विशद दृष्टिपात महाभारत के विराट पर्व श्लोक संखा 15/1–3/8–10 में मिलता है कुछ दासियाँ इस कार्य में इतना निपुण होती थीं कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवा से अपने स्वामियों को आकृष्ट कर लेती थी। जैसा की वेश्या दासी युयुत्स की माता ने धृतराष्ट्र को आकृष्ट कर लिया था। ऋग्वैदिक परम्परानुसार अपने स्वामी से पुरूष संतान उत्पन्न करने वाली दासी की स्थिति उच्च हो जाती थी। सन्तान उत्पन्न होने के पश्चात् उसका स्वामी उसका पति माना जाता था। महाभारत में विदुर की माता महार्षि व्यास के द्वारा मुक्त कर दी गयीं। जबकि उसने अपने स्वामी के लिए (नियोग द्वारा) एक पुरूष समान सन्तान उत्पन्न कर अपने स्वामी को प्रदान की थी। महाभारत में ऐसी स्त्री को भुजिश्या शब्द का अनुप्रयोग का प्रचलन हुआ। भुजिश्या से पुत्र विदुर, युयुत्स हुए यद्यपि ये राज्य के अधिकारी नहीं हुए हैं फिर भी ये लोग परिवार के सदस्य माने जाते थे। युयुत्स को धृतराष्ट का सपुत्र कहा गया है। पाण्डव जब वन को गये तो कुन्ती विदुर के घर पर रहीं। सम्भवतः केवल भुजिश्या दासी ही अपने स्वामी के लिए पुत्र उत्पन्न कर सकती थी। क्योंकि दूसरे उदाहरण में जहाँ के राजा की दासी ने नियोग द्वारा पुत्र उत्पन्न किया उन पुत्रों पर वास्तविक पिता ही उन पर अधिकार का आग्रह करता है। शर्मिष्ठा के वक्तव्य यह स्पष्ट करते हैं कि जो दासी लड़की को दहेज में दी जाती उनका सम्बन्ध उनके पति से हो सकता था। मनुस्मृति के रचनाकार मनु के अनुसार चूँकि दासियाँ स्वामी की सम्पत्ति समझी जाती थी। इसी लिए वे स्वभाविक रूप से अपने पति की सम्पत्ति होती थी। विराट नरेश की रानी या पत्नी सुदेषणा इस बात से भयभीत रहती थी कि सारन्ध्री (आज्ञात वास में द्रोपदी का दासी नामकरण) उनके पति को आकृष्ट न कर ले, दासियों की सामाजिक स्थिति अत्यन्त निम्न होती थी। सम्पत्ति की तरह उनका प्रयोग होता था। अतः इनके लिए नैतिकता के बन्धन का शिथिल होना स्वभाविक था। एक से अधिक बार उनका पति चुनना उनके लिए निन्दनीय नहीं था। कालान्तर में शास्त्रों में ब्राह्मण और शूद्र का सम्बन्ध निन्दनीय बताया गया है। लेकिन यह जानते हुए भी नियोग के लिए भी शूद्र दासियो से ब्राह्मण लोग सम्बन्ध स्थापित करने में नहीं हिचकते थे। दासित्व में अनेक प्रकार की निम्न स्थितियों का सामना करना पड़ रहा हैं। ये दासियाँ प्रायः रूप एवं सौन्दर्य से परिपूर्ण होती थी तथा ऐसी मान्यता थी कि यह चौसठ कलाओं से परिपूर्ण थी।

इस प्रकार महाभारत कालीन सामाजिक राजनीतिक स्थिति में महिलाओं की भूमिका को दो प्रवर्गो में विभक्त करके विश्लेषित करना नितान्त समीचीन है प्रथम प्रवर्ग अभिजात्य वर्ग की नारियों का है जिसका विश्लेषण इसके पूर्व के प्रसंग में विस्तृत रूप से किया गया है। जहाँ तक द्वितीय प्रवर्ग तथा महाभारत कालीन जन सामान्य नारी का प्रश्न है उसका ऐतिहासिक अनुशंधान करने से स्पष्ट होता हैं कि निम्न एवं जनसामान्य की महिला की सामाजिक व राजनीतिक भूमिका अत्यन्त सीमित थी। वह राजनीतिक या प्रशासनिक क्षेत्र में किसी प्रकार का सकारात्मक या नकारात्मक हस्तक्षेप करने में असमर्थ थी। जहाँ तक उनकी राजनीतिक एवं सामाजिक स्तरीकरण का प्रश्न हैं। वह निःसंकोच भाव से मध्यवर्ती प्रतीत होता है। ऐतिहासिक अनुक्रम में महाभारत कालीन समाज पर विहंगम दृष्टि डालें तो उस काल की जनसामान्य नारी का एक मिला जुला स्वरूप उभर कर सामने आता है जो न तो अधः पतन की पराकाष्ठा है और न सामाजिक स्तरीकरण का उच्चतम बिंदु है। सामान्य स्थिति का निरूपण इस रूप में किया जा सकता है कि सामान्य नारी की सामाजिक एवं राजनीतिक स्थिति घर के चूल्हे एवं चौके तक तथा परिवार के प्राचीरों में अपनी रचनात्मक प्रतिभा का गतिहीन अनुप्रयोग करती थी। समाज के इस संरचना में जिसमें सेविकाओं या दासियों की संगणना की जा सकती है। यह प्रवर्ग राजपरिवारों के सेवा में निरत रहता था, लगभग इस वर्ग की स्थिति उपभोग्य की थी। अद्यतन के सदृश्य ही नौकरानियाँ या दासियों के सम्भवतः महाभारत काल में दासियों का सामाजिक स्तरीकरण नहीं था। वर्तमान युग में दासियाँ या नौकरानियाँ सामाजिक दृष्टि से हेय समझी जाता थीं तथा स्वयं नौकरानियों में यह मनोवैज्ञानिक उद्भावना परिव्याप्त रहती है कि हमारी स्थिति निम्नतम है। मनोवैज्ञानिक व सामाजिक सहअस्तित्व से वर्तमान युग की नौकरानियों का स्तर सामाजिक व राजनितिक दृष्टि से उपेक्षापूर्ण है परन्तु महाभारत कालीन युग में इसकी स्थिति सर्वथा प्रतिकूल थी क्योंकि वर्तमान युग की दासी या नौकरानी जहाँ हीन वर्ग अथवा हीन अवस्था में अपना जीविकोपार्जन करती है, वहीं महाभारत कालीन दासी या नौकरानी वर्ग मनौवैज्ञानिक रूप से हीन नहीं थी। ऐसा इसलिए कि महाभारत कालीन दासियाँ उच्च वर्ग के लोगों से अपने अप्रच्छन्न वैवाहिक सम्बन्ध प्रतिस्थापित कर सकती थी। इस क्रम में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि उससे उत्पन्न सन्तान को समाज में समादर की दृष्टि से देखा जाता था विदुर तथा युयुत्स इसी कोटि के श्रद्धेय व्यक्तित्व थे। अतः महाभारत कालीन सामान्य नारी की अर्थात दासी व नौकरानी का भी सामाजिक स्तर वर्तमान युग से उत्कृष्ट था सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि महाभारत कालीन सामान्य नारी अपना प्रणय सम्बन्ध अभिजात्य वर्ग के पुरूष से स्थापित कर सकती थी तथा उसे सामाजिक विसंगतियों का शिकार नहीं होना पड़ता था। तथा उससे उत्पन्न सन्तान सामाजिक जटिलता के क्रूर पाश में आबद्ध नहीं होता था। फलतः महाभारत कालीन सामान्य नारियों की सामाजिक व राजनीतिक स्थिति मध्यवर्ती थी। महाकाव्य काल के बाद बुद्धकाल की नारियों की व्याख्या करना उनकी सामाजिक राजनीतिक स्थितियों की व्याख्या करना अति–महत्वपूर्ण हैं क्योंकि इतिहास का यह ऐसा काल खण्ड है जिसमें पहली बार ब्राह्मण धर्म को इतनी बड़ी चनौती दी थी। तथा वाह्य आडम्बर तथा कर्मकांड को मानवीय त्रासदी का स्वरूप बताया था। और सामाजिक संरचना को सबलता प्रदान की थी। बुद्धं शरण गच्छानिम, संघं शरणं गच्छामि, धम्मं शरणं गच्छामि की युक्तिपूर्ण न्याय संगत और तर्क पूर्ण उद्घोषणा ने भारत के राजनीतिक व सामाजिक जीवन को गहरे रूप से अनुप्राणित किया

था। बुद्ध काल भारतीय इतिहास का वह काल खंड है जो सामाजिक विषमता को सामाजिक समरसता में परिवर्तित करता है।

सन्दर्भ

1. इवोल्यूशन आफ मदर वरशिप इन इण्डिया शशि भूषण दास गुप्ता (ग्रेट विमेन ऑफ इण्डिया में संग्रहीत 1953 कलकत्ता) पृष्ठ संख्या 49–50।
2. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता–बेनी प्रसाद (पृष्ठ संख्या–50)।
3. बीमेन ऑफ इण्डिया : राधमुकुन्द मुखर्जी पृष्ठ संख्या 1।
4. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइशेन–ए0एस0 अल्टेकर (पृष्ठ संख्या–410–411)
5. ऋग्वेद श्लोक 1/115/2।
6. वीमेन इन ऋग्वेद : भगवत शरण उपाध्याय पृष्ठ संख्या–92।
7. ऋग्वेद 1/177/2।
8. सेशल लाइफ इन एन्शियन्ट इण्डिया, कल्चरल हेरिटेज ऑफ इण्डिया : हीरा चन्द चकलादार भाग 3 पृष्ठ 197।
9. ऋग्वेद 1/671/3।
10. ऋग्वेद 1/85/26।
11. ऋग्वेद 10/85/86।
12. वीमेन इन ऋग्वेद भगवातशरण उपाध्याय (पृष्ठ संख्या–3) 1941 बनारस।
13. हिन्दू सीविलाइजेशन–राधाकुमुन्द मुखर्जी–1985 बम्बई पृष्ठ 40।
14. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर (पृष्ठ–239–234)।
15. ऋग्वेद 1/111, 101, 118/10/8, 102, 2/10, 102/2/19।
16. वीमेन इन एन्शिएन्ट इण्डिया, सी0 वेन्डर लन्दन 1925 पृष्ठ 63।
17. हिन्दुस्तान की पुरानी सभ्यता : बेनी प्रसाद प्रयाग 1931 पृष्ठ संख्या 166।
18. ऐतरेय ब्राह्मण। 1–7।
19. हिन्दूस्तान की पुरानी सभ्यता : बेनी प्रसाद पृष्ठ संख्या–103 एवं पोजीशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन, ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–411।
20. उपर्यक्त पृष्ठ संख्या 411।
21. हिन्दू सिविलाइजेशन राधा मुकुद मुखर्जी, पृष्ठ संख्या–97।
22. पोजीशन ऑफ वूमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–14।
23. हिन्दू सिविलाइजेशन राधा मुकुन्द मुखर्जी पृष्ठ 141 एवं पोजीशन ऑफ वूमेन इन इण्डिया हिन्दू सिविलाइजेशन ए0एस0 अल्टेकर पृष्ठ संख्या–14।
24. दि कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया : ए0वी कीथ प्रथम भाग पृष्ठ संख्या–247।
25. हिन्दी साहित्य का वृहद इतिहास : काशी नागिरी प्रचारिणी सभा प्रथम भाग, पृष्ठ 202–203।
26. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 294/27।
27. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 294/27।
28. महाभारत : वेद व्यास धर्म पर्व 26।
29. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 267, 31।
30. महाभारत : वेद व्यास अनुशासन पर्व 44/51।
31. महाभारत : वेद व्यास उद्योग पर्व 173/2।
32. महाभारत : वेद व्यास अनुशासन पर्व 44, 12।
33. महाभारत : वेद व्यास विराट पर्व 11/10।
34. दि पोजिशन ऑफ वीमेन इन हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–189।
35. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 141, 14।
36. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 14/17।
37. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 27, 37/40।
38. दि सोशल एण्ड मिलिट्री पोजीशन ऑफ दि रूलिंग कास्ट इन एन्शिएन्ट इण्डिया : हाकिन्स 283।
39. महाभारत : वेद व्यास शान्ति पर्व 30 वां सर्ग।
40. दि सोशल एण्ड मिलिट्री पोजीशन ऑफ दि रूलिंग कास्ट इन एन्शिएन्ट इण्डिया : हाकिन्स 283।
41. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 32/53, 32/55।
42. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 32/54।
43. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 32/56, 32/57।
44. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 67/30।
45. महाभारत : वेद व्यास वन पर्व 235/4।
46. अर्थशास्त्र : आचार्य कौटिल्य 5/3/9।
47. राजतरंगिणी : कल्हण 7/183–184।
48. महाभारत में राज व्यवस्था : प्रेम कुमारी दीक्षित पृष्ठ संख्या–85।
49. महाभारत : वेद व्यास आदि पर्व 99/46–49, 100/1–29।
50. महाभारत : वेद व्यास आदि पर्व 75/5–6।
51. महाभारत : वेद व्यास समाधान पर्व 75/8।
52. महाभारत : वेद व्यास समाधान पर्व 76/20, पृष्ठ संख्या–354।
53. महाभारत : वेद व्यास समाधान पर्व 67/6–7।
54. महाभारत : वेद व्यास समाधान पर्व 69/9–10।
55. महाभारत : वेद व्यास उद्योग पर्व 129/11–12।
56. दि पोजीशन आफ वीमेन आफ हिन्दू सिविलाइजेशन : ए0एस0 अल्टेकर, पृष्ठ संख्या–189।
57. महाभारत : वेद व्यास उद्योग पर्व 129/43।
58. महाभारत : वेद व्यास उद्योग पर्व 129/20–49, 129/28।
59. महाभारत : वेद व्यास उद्योग पर्व 129/43।
60. महाभारत : वेद व्यास आदि पर्व 105/23–24।
61. महाभारत : वेद व्यास समापन पर्व 61/8–10।
62. महाभारत : वेद व्यास शल्य पर्व 61/32।
63. महाभारत : वेद व्यास शांति पर्व 324/34।
64. वीमेन इन ऋग्वेद : भगवतशरण उपाध्याय, पृष्ठ संख्या–110।
65. महाभारत वेद व्यास आश्रम पर्व 31471।
66. मनुस्मृति : महाराज मनु 81116।
67. महाभारत : वेद व्यास समापन पर्व 7113।
68. महाभारत : वेद व्यास समापन पर्व 44112/131।
69. महाभारत : वेद व्यास विराट पर्व 20116–26।
70. महाभारत : वेद व्यास आदि पर्व 168116।